

[illegible]य चिकित्सा

घर में, घर के समीप अथवा गाँव में जो वस्तु उपलब्ध हैं, उन्हीं से रोग-शान्ति के लिए, यह पुस्तक लिखी गई है।

श्यामसुन्दर-रसायनशाला, काशी.

प्रत्येक शहर, कस्बा और गाँव के घर-घर में रहने योग्य परम उपयोगी, स्वास्थ्य सम्बन्धी हमारी प्रकाशित पुस्तकें—

रसायनसार	६)	टोटका-विज्ञान	।=)
अनुपान-विधि	॥)	देहातियों की तन्दुरुस्ती	॥।)
अनुभूत-योग, प्र० भाग	१)	प्रारम्भिक स्वास्थ्य	।=)
अनुभूत-योग, द्वि० भाग	१)	आरोग्य लेखाञ्जलि	१)
नीम के उपयोग	१)	आहार सूत्रावली	॥)
मधु के उपयोग	१)	मट्ठा या छाछ के उपयोग	१)
भोजन-विधि (पथ्यापथ्य)	२)	सिद्ध मृत्युञ्जय-योग	१)
ग्राम-चिकित्सा	॥=)		

हमारा आगामी प्रकाशन

१—शरीर का मोटापा और उसे दूर करने के उपाय

२—प्रयोग-रत्नावली

३—आरोग्य निबन्धावली

श्यामसुन्दर-रसायनशाला, काशी.

श्री श्यामसुन्दर-आयुर्वेद-ग्रन्थमाला का सातवाँ पुष्प

ग्राम्य-चिकित्सा

लेखक—

पं० केदारनाथ पाठक, रासायनिक

प्रकाशक—

श्री उमेदीलाल वैश्य

श्यामसुन्दर-रसायनशाला, गायघाट, काशी।

दूसरा संस्करण] सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन [मूल्य ॥=)

प्रकाशक—

श्री उमेदीलाल वैश्य,
अध्यक्ष—श्यामसुन्दर-रसायनशाला,
गायघाट, काशी।

'रसायनसार' ग्रन्थ के रचयिता, आयुर्वेदोद्धारक

'रसायनशास्त्री' पं० श्यामसुन्दराचार्य्यजी वैश्य द्वारा स्थापित—

शास्त्रोक्त और पेटेन्ट शतशः औषधियों के निर्माता



भारत के प्रत्येक नगर कस्बा और गाँवों में स्टाकिस्ट (एजेन्ट) बनाये जा रहे हैं। सूचीपत्र और एजेन्सी नियमावली मँगाइये।

ज्ञान प्रेस, कर्णघण्टा बनारस।

विषय-सूची

उपयोग सूची

[फ]

[ब]

ग्राम्य-चिकित्सा

मंगल

जिसके चरण-कमल की, हर समय, ब्रम्हा आदि देव सेवा किया करते हैं, ऐसी बुद्धि, स्फूर्ति का देने वाली उस दिव्य सरस्वती को मैं प्रणाम करता हूँ।

उद्देश्य

घर में, घर के समीप अथवा गाँव में जो वस्तुएँ उपलब्ध हैं, उन्हीं से, रोग-शान्ति के लिए, यह पुस्तक लिखी जाती है।

घर की वस्तुओं के प्रयोग

राख—यदि किसी के हाथ या पैर में शोथ हो तो उस पर कण्डे की राख मलनी चाहिए। इससे शोथ हट जाता है।

लकड़ी का कोयला—नित्य नियम-पूर्वक लकड़ी के कोयले के चूर्ण से दाँत साफ करने से दर्द, पीब निकलना, हिलना तथा उनकी मलीनता दूर होती है।

आग—वायु, कफ या शीत लगने के कारण यदि पेट, सिर या किसी अंग में दर्द हो तो और सब उपाय छोड़कर सबसे पहले दर्द वाले स्थानपर, आग से अच्छी तरह सेंक करनी चाहिए। शीघ्र ही कष्ट दूर होगा।

बालू—यदि कफ या वायु के कारण शरीर के किसी हिस्से में दर्द या सूजन हो तो बालू की पोटली से सेंक करने से शीघ्र ही लाभ होता है।

पत्थर—नये उठे हुए बिना मुँह का घाव बैठाने के लिए. उसपर पत्थर गरम करके सेंक करनी चाहिए।

तम्बाकू के जले कोयले—तम्बाकू पीने के बाद जले हुए कोयले के चूर्ण से प्रति दिन दाँत साफ करने से दाँत चमकीले, मजबूत और कीड़ों से रहित हो जाते हैं।

बकरी की मींगनी—गीली फुन्सियों पर कपड़छन की हुई बकरी की मींगनी बुरकने से फुन्सियाँ सूख जाती हैं।

इमली के बीज—यदि किसी को सर्प काट ले और शरीर में काटने के चिह्न दृष्टिगोचर न हों तो काटेहुए स्थानपर

इमली के बीज घिसना चाहिए। इस उपाय से काटने के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगेंगे।

मिट्टी—उँगली के घाव, सिर, हाथ, पैर या पेट की जलन शान्त करने के लिए उनपर पानी में घुलीहुई मिट्टी का लेप करना चाहिए।

हुक्के का पानी—यदि हैजे के रोगी को पेशाब न उतरता हो तो हुक्के के पानी में तर किया हुआ कपड़ा पेड़ू पर रखना चाहि । इस प्रयोग से कुछ देर में पेशाब उतर जाता है।

हुक्के का कीट—यदि आँखों में दर्द हो रहा हो तो हुक्के के अन्दर जमा हुआ कीट निकाल थोड़े पानी में घोल, आग पर गरमकर, आँखों के वगल (पुट) में दोनों ओर लेप कर देना चाहिए। दूखती हुई आँखों के लिए यह अच्छी औषधि है।

लाह की टूटी चूड़ियाँ—जिस घाव से पानी चलता हो और फटकर उसका मवाद वाहर न निकलती हो तो उसपर टूटी हुई लाह की चूड़ियाँ जलाकर उसकी गरम-गरम राख रखनी चाहिए। इससे घाव फूटकर मवाद निकल जाती है।

पुराना कपड़ा—चोट लगने के कारण या कट जाने से, यदि खून बहता हो तो पुराना कपड़ा जलाकर घावपर भर देना चाहिए, इससे खून बहना वन्द होकर घाव सूख जाता है।

चूल्हे की मिट्टी—यदि किसी सांघातिक बीमारी के कारण रोगी का शरीर पसीने से तर हो जाय और शीत मालूम होने लगे तो चूल्हे की जली हुई मिट्टी कपड़छन कर शरीर पर मलना चाहिए। इससे पसीना और शीत मिटती है।

घर का जाला—यदि तलवार आदि से शरीर का कोई हिस्सा कट जाय तो उसमें घर का जाला भर देना चाहिए। इससे खून बहना बन्द होकर घाव सूख जाता है।

ठीकड़ा—यदि देह के रोएँ टूटकर बालतोड़ हो जाय और उसमें अधिक जलन हो तो उसपर पानी के साथ ठीकड़ा घिसकर लगा देना चाहिए। इससे शीघ्र ही जलन मिट जाती है और घाव भी सूख जाता है।

गोबर—गौ के ताजे गोबर का रस निचोड़कर आँखों में आँजने से दस दिन में रतौंधी मिट जाती है।

गोमूत्र—यदि शरीर में शोथ हो तो रोगी को कई दिनों तक अढ़ाई ताले की मात्रा में गोमूत्र पिलाना चाहिए और शोथ पर उसी की मालिश भी करनी चाहिए।

पुरानी रूई—कलेजे से ज्यादा बलगम गिरती हो, या शरीर के किसी हिस्से में दर्द होता हो तो पुरानी रूई गरम करके दर्द वाले स्थानपर बाँधनी चाहिए। इससे बलगम की बीमारी और दर्द दूर होता है।

पुराना टाट—पुराना टाट जलाकर उसकी राख जले हुए स्थानपर बुरकने से घाव जल्दी सूख जाता है। यदि वही राख गाय के घी या तिल के तेल में मिलाकर बच्चे की पसलियों में लगायी जाय तो कफ का रोग मिटता है।

नारियल का खोपड़ा—नारियल के ऊपर का दृढ़ खोपड़ा जलाकर निकाले हुए तेल के व्यवहार से उकवत आराम होता है।

छप्पर का पुराना बाँस—यदि छोटे बच्चे को हव्बा-डब्बा (पसली चलना) का रोग हो जाय, उसका पेट तना हो तो ऐसी दशा में उसके कलेजे, पसली और पेट को छप्पर के पुराने बाँस जलाकर, उसकी आग से सेंकना चाहिए।

चूहे की मींगनी—मूत्र की रुकावटपर चूहे की मींगनी जल के साथ पीसकर पेड़ूपर चढ़ाने से मूत्र खुलकर आने लगता है।

घोड़े की लीद—घोड़े की लीद योनि के सामने जलाने या उसकी धूनी देने से जीते या मरे हुए बच्चे शीघ्र निकल आते हैं।

बाल—आदमी के सिर के बाल जलाकर अर्क गुलाब में मिलावें और फिर उसे स्त्री के सिरपर मलें। इस उपाय से सुख-पूर्वक प्रसव होगा। यदि सिर के बाल घर के भीतर बिल में रख दें तो उस बिल से साँप नहीं निकल सकता है।

कबूतर की बीट—यदि ऋतुकाल में स्त्री, कबूतर की बीट अपनी योनि में रखे तो शीघ्र गर्भवती हो।

काली स्याही—आग से साधारण जलेहुए स्थानपर तुरत स्याही लगा देने से फोड़े नहीं होते और जलन मिट जाती है।

भूसा—भूसा जलाकर, उसके धुएँ में हाथ सेंक-सेंककर, बच्चे की पसली में सेंक करने से बच्चों की पसली—चलना और कफ—दोनों की शान्ति होती है। हाँ, भूसा जौ या गेहूँ का होना चाहिए।

खली—यदि किसी के शरीरपर मकड़ी के मूत्र से या

मकड़ी के दब जाने से फुन्सियाँ हो जायँ, तो उनपर सरसों की खली जलाकर उसकी राख बुरकनी चाहिए। इससे तीन-चार दिनों में ही फुन्सियाँ सूख जाती हैं।

कम्बल—यदि किसी का पेट अफर रहा हो तो गरम पानी में कम्बल भिंगो-भिंगोकर उससे सेंक करनी चाहिए। इससे अफारा मिट जाता है।

लोहा—यदि किसी उपाय से प्यास बन्द न हो तो लोहे का एक टुकड़ा आग में गरमकर कई बार पानी में बुझावें और वही पानी छानकर प्यासे को पिलावें, शीघ्र ही प्यास मिट जायगी।

ताँबा शुद्ध ताँबे का तार बनवाकर, छोटे बच्चे के गले में पिन्हा देने से उसके दाँत सुगमता से निकल आते हैं और किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने पाता।

काँसे की थाली—बुखार में पित्त का अधिक प्रकोप होने के कारण रोगी दाह से व्याकुल हो रहा हो तो उसे चित्त लेटाकर उसकी नाभी के ऊपर एक काँसे की थाली रखकर ऊपर से शीतल जल की धारा छोड़ें। जब जल से थाली भरनेपर हो जाय तब जल फेंक दें और फिर जल की धारा छोड़ें। इस विधि से दो-तीन बार जल की धारा छोड़नेपर शीघ्र ही दाह की शान्ति हो जाती है और रोगी को आराम मालूम होने लगता है।

कौड़ी कौड़ी जलाकर कूट और कपड़छन करलें। जिसके कान से पीव निकलता हो, उसके कान में, दिन में तीन-चार बार उस चूर्ण को बुरक दिया करें। तीन-चार दिनों में ही कान—बहना बन्द हो जायगा।

मिट्टी का तेल—दादपर मिट्टी के तेल की मालिश करने से तीन-चार दिनों में ही दाद सूख जाती है और उसमें पपड़ियाँ उखड़ने लगती हैं। इसके अतिरिक्त बादी के दर्दपर इस तेल की मालिश करने से जल्दी ही दर्द मिट जाता है।

रेंड़ी का तेल—छोटे बच्चे को कब्ज होनेपर उसके पेड़ूपर रेंड़ी का तेल चुपड़कर सेंक करनी चाहिए और उसपर रेंड़ी का पत्ता रखकर बाँध देना चाहिए। यदि एक बार में दस्त न हो तो घण्टे-दो घण्टे के बाद फिर एक बार यह उपाय करना चाहिए। अवश्य दस्त होगा।

जिसे रतौंधी हो गई हो, उसके सिर में कई दिनों तक रेंड़ी के तेल की मालिश करने से रतौंधी मिट जाती है।

ताड़ का पंखा—मूर्च्छित मनुष्य के चेहरेपर शीतल जल से भींगे हुए ताड़ के पंखे से हवा करनी चाहिए। इससे अंशुघात (लू लगना) या गरमी के कारण होने वाली बेहोशी मिटती है।

दिया—कड़ुए या रेंड़ी के तेल के दिए में काजल बनाकर बच्चे को लगाने से उसकी आँख की कसावट मिट जाती है और जल्दी नींद आ जाती है। बच्चों के अतिरिक्त यह प्रयोग जवान और बूढ़े सभी के लिए उपयोगी है।

कुश—कुश जल के साथ पीस और छानकर पिलाने से वमन रुक जाता है।

सोना—मिट्टी के घड़े के जल में सोने की अँगूठी या कोई आभूषण डालकर घण्टे-दो घण्टे पड़ा रहने दें और फिर उस जल

से बच्चे या जवान को स्नान करावें तो सूखा-रोग मिटता है। यह जल कुछ दिनों तक पीने के लिए भी देना चाहिए।

सिंदूर—यदि किसी चीज से चोट लगकर शरीर कट जाय तो कटे हुए स्थानपर सिन्दूर भर देना चाहिए। इससे खून-बहना बन्द होकर घाव शीघ्र ही सूख जाता है।

मलयागिरि चन्दन—मलयागिरि चन्दन जल के साथ घिसकर सिरपर लेप करने से गरमी के कारण होने वाला सिर का दर्द मिट जाता है।

धूप—अढ़ाई तोले धूप (देवदारु) आधा सेर जल में पकावें। जब एक छटाँक शेष रहे, उतारलें और शीतल होनेपर एक तोला मधु मिलाकर रोगी को पिलावें। नित्य प्रातः काल, कई दिनों तक पीने से प्रसूत ज्वर, प्रदर और प्रमेह मिट जाता है।

मोम—पाँच तोले मोम गरमकर उसमें एक रूमाल तर करके रखलें और जब किसी के अण्डकोश में दर्द या शोथ हो तो वह रूमाल जरा आंग में सेंक, अंडकोशपर रख, ऊपर से लँगोट कसलें। इस प्रकार कई दिनों तक मोम वाले कपड़े की पट्टी बाँधने से रोग निर्मूल हो जाता है।

तुलसी—जिसे जुकाम हो गया हो, उसे दिन में तीन-चार बार तुलसी की पचीस-तीस पत्तियाँ लेकर चबानी चाहिए। इससे जुकाम मिटता है और बुखार नहीं होने पाता।

जाड़े का बुखार रोकने के लिए, बुखार आने से तीन घण्टे पहले ही हाथ-पैर के नाखूनों में तुलसी की पत्तियों का रस और कडुआ तेल मलना चाहिए और कालीमिर्च के साथ तुलसी की ताजी पत्तियाँ चबाते रहना चाहिए।

एक पाव तुलसी की पत्तियों का रस और एक पाव कड़ुआ तेल—इन्हें पकावें। जब केवल तेल शेष रहे, उतारलें और छानकर बोतल में रखलें। इसे सुरसादि तैल कहते हैं। इसकी मालिश करने से सभी तरह की वात-व्याधि के दर्द दूर होते हैं,

काली तुलसी की जड़ पान में रखकर खाने से सहवास के समय रुकावट होती है।

बिच्छू काटनेपर तुलसी की जड़ दंश-स्थान पर जल के साथ घिसकर लगादें। शीघ्र ही विष उतर जायगा।

रुद्राक्ष—वसन्त-ऋतु में नित्य प्रातःकाल एक रुद्राक्ष जल के साथ पीस और जल में ही घोलकर पीने से चेचक होने का भय नहीं रहता। इस ऋतु में इसकी माला धारण करना भी हितकर है।

एक रुद्राक्ष दूध के साथ पत्थर पर घिस और दूध में ही घोलकर पीने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

रीठा रीठे के बीज जल के साथ पीसकर नास देने और थोड़ा पिलाने से अपस्मार रोग का दौरा रुक जाता है।

सर्प-विष, अतिसार और हैजे के दस्त बन्द करने के लिए रीठे की गिरी का जल पिलाना लाभदायक है।

सावे—सावे जलाकर, उसकी राख मधु के साथ चटाने से हैजा और प्यास मिटती है।

साधारणतः इसकी राख की मात्रा चार आने भर की है।

बिनौला—बिनौला जलाकर उसी की लपट में बार-बार हाथ गरम करके पेट सेंकने से उसकी वेदना शान्त हो जाती है।

सुरती—यदि बलगम या बादी के कारण अण्डकोष बढ़ जाय तो रात में सोते समय, कई दिनों तक, तम्बाकू का पत्ता बाँधना चाहिए। इससे अण्डकोष का बढ़ना और दर्द आराम हो जाता है। यदि तम्बाकू के पत्ते बाँधने से अधिक गरमी मालूम पड़े और वमन होने लगे तो पत्ते बाँधना छोड़कर चूने का निथरा हुआ जल पीना चाहिए। इससे गरमी और वमन दोनों मिट जायँगे।

चूना—बच्चों के हरे-पीले दस्त और बिगड़ा हुआ यकृत ठीक करने के लिए चूने का निथरा हुआ जल पीने को देना चाहिए।

विशेष—पाँच सेर पानी में एक पाव कली चूना डालकर मिलावें और पड़ा रहने दें। चार-पाँच घण्टे बाद चूना बरतन के पेंदे में बैठ जायगा और उसका निर्मल जल ऊपर रह जायगा। वही निर्मल जल ग्रहण करें। यही चूने का निथरा हुआ जल कहलाता है।

कत्था—दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा कत्था चबाते रहने से मुख-पाक (मुँह का छाले) आराम हो जाता है।

चार आने भर कत्थे का काढ़ा नित्य पीने से कुछ दिनों में रक्त की शुद्धि हो जाती है।

पान -दूषित व्रणपर पान की पट्टी बाँधने से वह शीघ्र आराम हो जाता है।

स्त्री के स्तनों में दूध कम करने के लिए उसपर पान की पट्टी बाँधनी चाहिए।

सुपारी—सुपारी जलाकर पीसलें और दाद अच्छी

तरह खुजलाकर उसपर उस चूर्ण को बुरकदें। इस प्रकार कई दिनों तक करने से दाद जड़ से आराम हो जायगी।

पानी—मूर्च्छित मनुष्य की मूर्च्छा दूर करने के लिए उसके चेहरेपर ठंढे पानी के छींटे देने चाहिए और थोड़ी-थोड़ी देरपर पानी पिलाना भी चाहिए।

शराब—पेड़ से गिरे हुए मनुष्य को मात्रा के अनुसार थोड़ी-थोड़ी देर पर, तेज शराव पिलाते रहने से दर्द का अनुभव नहीं होता और शरीर में शक्ति आती है।

भाँग—भाँग की पोटली से सेंक करने से बादी, बवासीर का दर्द, गुदभ्रंश (कांच-निकलना), योनि-शूल आराम होता है तथा ढीली योनि संकुचित होती है।

अफीम—मटर के बराबर अफीम थोड़े-से जल में घोल-कर आगपर पकावें, जब लेप की तरह हो जाय, पैसे के बराबर कपड़े के दो टुकड़े काटकर उसीपर उसे फैलादें और दोनों पुट पुटियों में साट दें। इससे आँख—आना, कीच-बहना, लाली और दर्द मिटता है तथा जुकाम-नजला दूर होता है।

मधु—आग से जलनेपर, जले हुए स्थानपर तुरत मधु लगा देने से जलन मिट जाती है, फोड़े नहीं बढ़ने पाते और घाव जल्दी आराम हो जाता है।

विशेष— घाव अच्छा होने के बाद यदि कुछ दिनों तक उस स्थान पर बराबर मधु में भिंगोकर रुई का फाहा रखा जाय तो जले हुए स्थान का सफेद दाग मिट जाती है।

घी—यदि तलवार से कट जाने के कारण किसी अङ्ग में कमजोरी आ जाय और वह अंग सूखता जाय तो उस स्थानपर रात-दिन में तीन-चार बार कोष्ण (कुछ गरम) घृत की मालिश करनी चाहिए और रोगी को अच्छी तरह घृत खाने को भी देना चाहिए।

जिसे दिमाग में चक्कर आता हो और आँखों से कम दिखाई देता हो, उसे नित्य प्रातःकाल चार तोले गाय के घी में तीस दाने कालीमिर्च का चूर्ण डाल, गरम करके पीना चाहिए। इससे दिमाग और आँखों की सभी शिकायतें दूर हो जायँगी।

विशेष—घी पीने के बाद आधे घण्टे तक जल पीना मना है।

मक्खन—रोज प्रातःकाल चार तोले मक्खन खाने और सिरपर रखने से सिर की गरमी, चक्कर आना, कब्ज, कंठ सूखना, नाक में पपड़ियाँ पड़ना, नाक से खून गिरना एव दिमाग की कमजोरी मिटती है।

गाय का दूध—गाय के ताजे दूध की चेहरे पर मालिश करने से चेहरा चमकीला होता है।

जिसे रात में सोते समय नित्य गरम दूध पीने का अभ्यास है, उसके शरीर का खून कभी नहीं घटता और उसे अच्छी नींद आती है इसके अतिरिक्त उसे कब्ज की शिकायत कभी नहीं रहती।

दही—गाय का दही शरीर में मलकर स्नान करने से शरीर की खुजली, रूखापन, बदबू और मैल दूर होता है तथा शरीर की कान्ति बढ़ती है।

गाय के दही के ऊपर की मलाई की पट्टी बाँधने से उँगली में होने वाले घाव की जलन मिटती है और वह जल्दी फूटकर अच्छा हो जाता है।

मठा—भोजन के बाद मठा पीने का अभ्यास डालने से शरीर में वीर्य की वृद्धि होती है।

जो प्रति दिन मठे का सेवन करता है, उसके पेट में कीड़े (केंचुआ) नहीं होने पाते।

यदि छोटे बच्चे को बार-बार पाखाने की हाजत मालूम पड़े और वह जो कुछ खाय, पाखाने में ठीक वही गिरे, तो उसे दिन में दो बार नियम-पूर्वक कुछ दिनों तक मठा पिलावें, पेट ठीक हो जायगा।

बड़े लोगों का पेट—दर्द और पतले दस्त ठीक करने के लिए सधा नमक के साथ मठा देना चाहिए।

कड़ुआ तेल—यदि बादी या बलगम के कारण आधे सिर में दर्द हो तो दर्द वाले स्थानपर कड़ुआ तेल गरमकर रूई में भिगोकर रखना चाहिए। यदि जुकाम हो गया हो तो तेल गरम करके नास लेना चाहिए।

प्रति दिन नाभी में कड़ुआ तेल लगाने से होंठ नीले नहीं होते हैं और न फटते हैं।

गुड़—चिकने अन्न के भोजन के कारण होने वाली तृषा मिटाने के लिए गुड़ का शरबत पिलाना चाहिए।

बच्चा जनने वाली स्त्री या तुरत की ब्यायी हुई गाय को रोज थोड़ा-थोड़ा गुड़ खाने को देना चाहिए। इससे शरीर में शीघ्र ही शक्ति आती है।

महुआ—सुजाक के रोगी को चार तोले महुआ आधा सेर गौ के दूध में पकाकर, उसकी खीर तीन दिनों तक खाने को देनी चाहिए।

जिसके हाथ-पैर में चोट आ गयी हो या टूट गये हों तो महुआ उबालकर उसी के जल से दर्द वाले स्थान को धोना चाहिए और थोड़ा वही जल पीने को भी देना चाहिए।

गठिया रोग वाले को प्रति दिन महुआ भूनकर खिलाना लाभदायक है।

तिल का तेल—तिल के तेल की हाथ-पैर के तलवों में मालिश करने से उनकी जलन मिटती है और नींद आती है।

जिनके दाँतों से बदबू आती हो और हिलते हों तो उन्हें, दतुअन करने के बाद प्रति दिन तिल के तेल से दाँत मलना चाहिए। इससे दाँत मजबूत होते, बदबू और कीड़े मरते एवं उनकी अच्छी सफाई हो जाती है।

अलसी का तेल—कमर या ठेहुने के दर्दपर अलसी का तेल गरम करके मालिश करनी चाहिए।

अलसी के तेल में चूने का निथरा हुआ जल डालकर खूब फेंटें, जब एक दिल हो जाय, शीशी में रखलें और आग से जले हुए स्थानपर मरहम की तरह लगावें। इसके व्यवहार से घाव शीघ्र आराम हो जायगा।

नारियल का तेल—जिसे समूचे शरीर में खुजली चलती हो उसे प्रति दिन अपने शरीर में नारियल के तेल की मालिश करके स्नान करना चाहिए। इसके व्यवहार से दाह भी शान्त होती है।

गेहूँ—गेहूँ जलाकर निकाला हुआ तेल लगाने से उकवत आराम होता है।

विशेष— गेहूँ जलावें जब जलकर धुँआ देने लगे तब झट उसे एक लोहे के बरतन में रख, ऊपर से दूसरे लोहे से दबा दें दबाने से लोहेपर जो चिपचिपा काला-सा पदार्थ निकल आवे, उसे व्यवहार में लावें। वही गेहूँ का तेल कहलाता है।

मूँग—मूँग जला और कपड़छानकर शरीरपर मलने से अधिक पसीना निकलना बन्द हो जाता है।

हरा मूँग पीसकर शरीरपर उसका उबटन करने से त्वचा मुलायम और साफ हो जाती है।

जौ जौ का आटा पानी में घोलकर मस्तकपर लेप करने से मस्तक की पित्तज पीड़ा शान्त होती है।

जौ कुचलकर पानी में भिगोदें। जब पानी निथर जाय, पानी अलग लेकर जरा गरम करलें और उसी का गण्डूष (कुल्ले) धारण करें। शीघ्र ही कंठ-शोथ नाश होगा।

चावल - वैद्यक-विधि से बनाये हुए चावलों के माँड़ के व्यवहार से ज्वर, पित्तज शोथ तथा मूत्राघात मिटता है।

चावल सिलपर पीसकर उसमें घी मिलाकर विसर्प पर लेप करने से उसकी शान्ति होती है।

यदि आँखों में लाली और दर्द हो तो किंचित गरम भात की पोटली से सेंक करनी चाहिए। इससे कफ और वादी के कारण होने वाले आँखों के रोगों का शमन होता है।

मटर उँगलियों का शोथ मिटाने के लिये, शोथ वाली

उँगली मटर के किंचित गरम काढ़े में कुछ देर तक डुबाये रखनी चाहिए।

मुख की झाँई मिटाने के लिए मटर का उबटन लगाना उत्तम है।

काँगनी—काँगनी जल के साथ पीसकर लेप करने से गठिया का दर्द मिटता है।

इसका क्वाथ पीने से मूत्र खुलकर आता है।

तिल—तिल जल के साथ पीसकर पुल्टिस बाँधने से अशुद्ध गावों की शुद्धि हो जाती है और घाव जल्दी भर जाता है।

जल के छींटे देकर सिलपर पीसेहुए तिल का गोला बनाकर पेटपर घुमाने से पेट का दर्द मिट जाता है।

छः तोले काला तिल कूटकर चौबीस घण्टों तक जलमें भिगो रखें। सवेरे ही छानकर पानी पिलाने से सद्यः प्रसव करनेवाली स्त्री का बच्चा शीघ्र निकल आता है।

अलसी—अलसी जल के साथ पीस और जरा गरम कर पोल्टिस बाँधने से कच्चा घाव शीघ्र पक जाता है। जब पुल्टिस कुछ-कुछ गीली रहे, तभी उसे हटाकर दूसरी बाँध देनी चाहिए।

अरहर—अरहर की दाल पानी में भिगोदें और जब वे अच्छी तरह कचरी बन जायँ तब उन्हें सिल पर पीस और एक कपड़ेपर फैलाकर पुल्टिस बनालें। जिस बच्चे को गुदभ्रंश (काँच निकलना) का रोग हो उसकी गुदा में उसे बाँधें।

इसी प्रकार कई दिनों तक पुल्टिस बाँधते रहने से काँच निकलना धीरे-धीरे कम हो जाता है।

चना—पाँच तोले चना एक पाव जल में भिगो दें और प्रातःकाल छानकर चना अलग कर दें और उस जल में थोड़ी शक्कर मिलाकर पित्तज उन्माद वाले को पिलावें तो रोग धीरे-धीरे कम हो जायगा।

कुलथी—प्रसव के पश्चात् अन्तर-मल निकालने एवं गर्भाशय को पीड़ा दूर करने के लिए कुलथी का काढ़ा पीने को देना चाहिए।

छिलके-सहित कुलथी पकाकर नित्य प्रातःकाल, खाली पेट खाने से मोटापा कम होता है।

मसूर—दीर्घकालीन दुष्ट व्रण की शुद्धि के लिए, मसूर की दाल जल में पीसकर लेप करना चाहिए।

मसूर जलाकर उसकी राख का मंजन करने से दाँत चमकीले और शुद्ध हो जाते हैं।

उड़द—उड़द पकाकर हलुए की तरह बनालें और उसकी पुल्टिस बनाकर पित्तज शोथ पर बाँधें तो उसकी शीघ्र शान्ति हो।

तालू पर इसका आटा पानी में घोलकर लेप करने से नकसीर बन्द होती है।

साँवा—जल के साथ साँवा पीसकर पेडू पर चढ़ाने से माहवारी का दर्द मिटता है।

कोदों—किसी प्रकार का विष खा लेने के पश्चात् जो

आदमी बच जाय, उसे कई दिनों तक नित्य कोदों का भात खाने के लिए देना चाहिए। इससे उदर के भीतर के विष का सूक्ष्म अंश नष्ट हो जाता है और दाह की शान्ति होती है।

जिसे नाक से खून गिरे उसे कोदों का भात खाना हितकर है। कोदों जल के साथ पीसकर नकसीर वाले के सिर पर लेप करने से खून गिरना बन्द होता है।

मरूआ—प्रसव-वेदना से छटपटाती हुई स्त्री के समूचे शरीर में मरुए का आटा लेप करने से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

प्याज—बेहोश व्यक्ति की नाक में प्याज के रस की नास देने से जल्दी होश हो जाता है।

लाल रंग का एक प्याज काटकर तीन तोले घी में पकाकर लाल करें। जब प्याज के टुकड़ों पर लाली आ जाय, आग पर से उतार लें और रोटी या भात के साथ खायें। जाड़े के दिनों में महीनों इसका व्यवहार करते रहने से नपुंसकता दूर हो जाती है। यदि प्याज खाने के बाद मुँह से दुर्गन्ध निकले तो कुछ धनिये के दाने चबाने चाहिए।

लहसुन—गठिया के दर्द पर लहसुन पीसकर लगाने से दर्द मिटता है।

जो भोजन के साथ नित्य-नियमपूर्वक घी में भुना हुआ लहसुन खाता है वह कभी भी नपुंसक नहीं होता और न उसकी आयु घटती है।

जिसे अन्न से अरुचि हो गयी हो उसे नमक के साथ कच्चा लहसुन खाना चाहिए। अरुचि मिट जायगी।

सफेद जीरा—कई दिनों तक मुट्ठी भर सफेद जीरा चबाकर उसका रस निगल जाने से प्रदर, सोमरोग, कष्टार्तव, योनिशूल तथा योनिकण्डु मिटती है।

एक तोले जीरा जल के साथ सिल पर पीसकर एक तोले घी में भूनें, जब भुन जाय तब उसमें एक तोले लाल खाँड़ और आठ तोले गौ का दूध डालकर हलुवा बनालें। इसे नित्य प्रातः-काल खाकर ऊपर से इच्छानुसार गौ का कुछ गरम-गरम दूध पीने से पतला दस्त होना, चक्कर आना और दूध का कम होना ठीक हो जाता है। प्रसव के बाद स्त्रियों को इसे अवश्य सेवन कराना चाहिए।

राई—जल के साथ राई पीसकर सूजन वाली गठिया पर लेप करने से गठिया और सूजन, दोनों आराम होते हैं।

हल्दी—तीन माशे हल्दी का चूर्ण नित्य प्रातःकाल मधु के साथ चाटने से कुछ दिनों में ही प्रमेह और रक्त-विकार मिट जाता है।

यदि भोजन में अधिक नमक खा लेने के कारण कण्ठ सूखे और प्यास मालूम हो तो भोजन के साथ कुछ अधिक मात्रा में हल्दी खाने से नमक का दोष मिट जाता है।

अदरख—वातगुल्म या अपस्मार रोग में जब रोगी दर्द के कारण बेहोश हो जाय, उसकी दाँती भिंच जाय या होश होने पर भी गला रुककर आवाज न निकले तो ऐसी दशा में अढ़ाई

तोले अदरख का रस गरम करके पिलाना चाहिए। इससे बेहोशी और गले का रुकना मिट जाता है। होश में लाने के लिए इसके रस की नास भी देनी चाहिए।

बड़ी इलायची—बड़ी इलायची का तीन माशे चूर्ण मक्खन के साथ चाटने से आँतों की ऐठन, शूल, दस्त की बार-बार शंका, अतिसार और आमातिसार मिटता है।

छोटी इलायची—छोटी इलायची का चूर्ण सूँघने से मस्तक की पीड़ा मिटती है।

इसका क्वाथ पीने से तृषा, वमन और अरुचि का नाश होता है।

मेथी—आग से जलने पर जल के साथ मेथी पीसकर तुरत उस पर लेप कर देने से जलन शान्त हो जाती है और फफोल नहीं होने पाते।

पत्रज—पत्रज या पत्रज की डंठल जल के साथ पीसकर लेप करने से सभी तरह की मस्तक-पीड़ा शान्त हो जाती है।

सेंधानमक—यदि किसी के हाथ की हड्डी टूट गयी हो या शरीर के खून का दौरा बन्द हो गया हो तो उस स्थान पर बराबर सेंधानमक का ढेला रखना चाहिए। इससे टूटी हुई हड्डी जुट जाती है और खून की चाल ठीक हो जाती है।

धनिया—धनिया जवकुट करके आधा सेर जल में पकावें। जब एक छटाँक शेष रहे, उतार लें और छानकर नित्य प्रातःकाल पीवें तो नाक, मुँह, पाखाने और पेशाब के रास्ते से गिरने वाला खून बन्द हो और प्यास की बीमारी भी मिट जाय।

हींग—गरम जल के साथ मटर के बराबर हींग निगल जाने से उदर शूल, अतिसार, हिचकी और वमन शीघ्र आराम हो जाता है।

दो तोले की मात्रा से, कुछ दिनों तक, शुद्ध हींग का अर्क पीते रहने से योषापस्मार (स्त्रियों की मृगी) मिट जाती है।

पीली सरसों—भुनी हुई पीली सरसों दूध के साथ पीसकर उबटन करने से शरीर की खुजली, रूखापन, मैल और दुर्गन्ध दूर होती है तथा कोमलता बढ़ती है।

अजवायन—एक मुट्ठी अजवायन चबाकर ऊपर से गरम पानी पीने से पेट का दर्द तत्काल मिट जाता है। यह प्रयोग अजीर्ण और अतिसार पर भी लाभदायक है।

कडुवे तेल में अजवायन पकाकर शरीर में मालिश करने से शरीर की ऐठन, दर्द और शीत आना मिट जाता है।

लालमिर्चा श्लीपद (हाथीपाँव) या हाथ—पैर में पानी उतरने पर उस स्थान पर जल के साथ पीसकर लालमिर्च का लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

यद्यपि इससे जलन अधिक होती है और वहाँ का चमड़ा लाल हो जाता है; किन्तु सचमुच लाभ होता है।

भोजन के साथ बराबर लालमिर्चा का व्यवहार करते रहने से विदेश का पानी असर नहीं करता।

सौंफ—एक तोले कच्ची और एक तोले तवे पर भुनी हुई सौंफ लेकर कूट और कपड़छन करलें और रोज सुबह-शाम शीतल जल से खायें। यह एक मात्रा है। इसके सेवन से आमा-

तिसार, रक्तातिसार तथा वादी से पेट—फूलना आराम होता है।

दिन में कई बार सौंफ का चूर्ण थोड़ा-थोड़ा चूसते रहने से कंठ का सूखना और प्यास मिटती है।

कालीमिर्च—आठ आने भर कालीमिर्च का चूर्ण चार तोले गाय के घी के साथ गरम करके खाने से विष का वेग कम होता है।

साबूत कालीमिर्च जल के साथ पीसकर लेप करने से इन्द्र-लुप्त की बीमारी मिटती है।

इसके चूर्ण की नास से बेहोश आदमी शीघ्र होश में आ जाता है।

बहुत बड़ा और दर्द वाला मुँहासा फोड़ना न चाहिए; किन्तु उस पर जल में कालीमिर्च घिसकर लेप कर देना चाहिए। इससे वह सूख जायगा।

मँगरैला—नित्य प्रातःकाल गौ के दूध के साथ तीन माशे मँगरैले का चूर्ण खाते रहने से प्रसूता स्त्री को शीघ्र दूध उतर आता है। इसमें सन्देह नहीं।

जावित्री—तवे पर जावित्री भून लें और कूट-कपड़-छन करके तीन माशे की खूराक से, जल के साथ घण्टे-घण्टे पर खिलाते रहने से हैजा की बीमारी मिट जाती है।

जायफल—यदि छोटे बच्चे को दस्त, कै, और सर्दी, का बुखार हो तो दिन-रात में चार-पाँच वार, दो-दो तीन-तीन घण्टे पर माँ या बकरी के दूध में जायफल घिसकर देना चाहिए। एक बार में एक रत्ती या डेढ़ रत्ती से अधिक नहीं देना चाहिए।

यह सात-आठ महीने के बच्चे की खूराक है। यदि इससे भी ज्यादा दिन का बच्चा हो तो तीन रत्ती तक जायफल दिया जा सकता है।

बकरी के दूध में जायफल घिसकर और कुछ गरम-गरम सिर पर लेप करने से जुकाम, सिर का दर्द और उसका भारीपन मिटता है।

लौंग—शीतल जल के साथ लौंग पीसकर और जल में ही घोलकर पिलाने से प्यास मिटती है।

इसे जल के साथ पीसकर तालू पर लेप करने से प्रतिश्याय (जुकाम) मिटता है।

इसका महीन चूर्ण दाँतों के नीचे दबाने से उनका दर्द और कीड़े दूर होते हैं।

जब बहुत तेज खाँसी चल रही हो, उस समय चार कच्ची और चार भूनी हुई लौंग एक साथ ही चबाने से खाँसी का दौरा रुक जाता है और कण्ठ के भीतर बार-बार कफ आना रुक जाता है।

छड़ीला—छड़ीले की धूनी देने, नस्य लेने या लेप करने से मस्तक की पीड़ा मिटती है।

कुत्ते का विष दूर करने के लिए इक्कीस दिनों तक इसका काढ़ा पीना चाहिए और दंश स्थान पर जल के साथ उसे पीसकर लेप भी करना चाहिए।

दालचीनी—डेढ़ माशे दालचीनी का चूर्ण रात के समय जल के साथ खाने से आमातिसार, उदर-कृमि और शूल मिटता है।

जल के साथ दालचीनी पीस और गरम करके सिर पर लेप करने से सिर का भयंकर दर्द शीघ्र मिट जाता है।

स्याहज़ीरा—यदि स्त्री के गर्भाशय में शोथ हो गयी हो तो उसे, एक बड़े पात्र में स्याहज़ीरे का कुछ गरम काढ़ा भरकर बैठाना चाहिए। पन्द्रह-बीस मिनट तक नित्य एक बार नग्न होकर स्याहज़ीरे के क्वाथ में बैठने से शोथ निश्चय मिट जायगी। इसके अतिरिक्त दो तोले स्याहज़ीरा क्वाथ-विधि से पकाकर प्रातःकाल पीने को भी देना चाहिए।

पकी इमली—जल में पकी इमली घोल, छान और शक्कर मिलाकर पिलाने से लू का असर मिट जाता है। गरमी के दिनों में इस पानक के सेवन करने वाले का स्वास्थ्य ठीक बना रहता है।

अमचूर—तीन माशे अमचूर गरम जल के साथ खाने से पेट का दर्द और पतला दस्त आराम होता है।

खीरा—चाकू से खीरा काटकर सूँघने और उसका टुकड़ा मस्तक पर रगड़ने से पित्तज मस्तक-पीड़ा मिटती है।

इसके टुकड़े बिछाकर उस पर सिर रखने से अंशुघात (लू लगना) का कष्ट मिटता है।

ककड़ी—ककड़ी के भीतर से ताजे बीज निकालकर सिल पर पीस लें और उसे घी में भूनकर बराबर शक्कर मिलालें। जिसे कष्ट से पेशाब उतरता हो, उसे खाने को दें। इससे मूत्रावरोध और उसकी जलन मिट जायगी।

गीले बीज चार तोले, घी एक तोले और लाल खाँड़ दो तोले लेना चाहिए।

गाजर—ब्याई हुई गाय को कच्चा गाजर खिलाने से वह खूब दूध देगी और मोटी भी हो जायगी।

दूध में गाजर उबालकर उसके भीतर की रीढ़ निकाल डालें और और उसका गूदा सिल पर पीसकर घी में भूनें। जब सुगन्ध उठने लगे, खाँड़ और उबालने के बाद जो दूध बचा है, उसे डालकर चलायें। जब अच्छी तरह पक जाय, उतारकर दूध के साथ स्त्री को खिलायें। इसके सेवन से शरीर में जल्दी खून बनने लगता है और स्त्री खूब दूध वाली हो जाती है। इस हलुवे को मर्द भी खा सकते हैं। ताकत के लिए यह अच्छी चीज है।

पोई—पोई के ताजे पत्ते उसी के रस में चुपड़कर बाँधने से अबुर्द का नाश होता है।

लौकी—ताजी लौकी के भीतर से मुलायम बीजों को निकाल, सिल पर पीस लें और गाय के घी में सेंककर उसमें जरा-सा सेंधा नमक मिला लें और पित्तज उन्माद वाले को खिलावें। इसके व्यवहार से पित्तज उन्माद के रोगी के मस्तिष्क की शुद्धि होती है।

पेठा—पेठे के रस में खाँड़ मिलाकर पीने से रक्तपित्त रोग मिट जाता है। जिसका दिमाग गरम हो गया हो और नाक से अधिक खून गिरता हो तो उसके मस्तक पर ताजे पेठे का गूदा रखना चाहिए। यह रक्तपित्त की उत्तम दवा है।

पपीता—ताजा पपीता चाकू से गूँदकर दूध निकाल लें और एक से पाँच बूँद तक की खूराक से उसे बताशे में

रखकर यकृत् और प्लीहा वाले रोगी को खिलावें तो रोग शीघ्र नाश हो।

पेड़ का पका या कच्चा पपीता भी रोगी को खिलाना उत्तम है।

परवल—ताजा परवल कुचलकर रस निकाल लें और दो तोले रस में आठ आने भर मधु मिलाकर पित्तज ज्वर एवं दाह से पीड़ित रोगी को पिलावें। इससे ज्वर, दाह एवं कब्ज दूर होता है।

अरवी—ततैया (हड्डा) के काटे हुए स्थान पर अरवी चाकू से काटकर घिस देने से उसका जहर नष्ट हो जाता है और शोथ भी कम होती है।

जले हुए स्थान पर अरवी पीसकर लगा देने से फफोले नहीं होने पाते और जलन मिट जाती है।

तरबूज—पके हुए तरबूज को बीच से दो टुकड़े करके दोनों टुकड़ों में से थोड़ा गूदा निकाल लें और उसमें खाँड़ भरकर दिन में धूप और रात में चाँदनी लगने को छोड़ दें। चौथे दिन उसका रस निचोड़कर बोतलों में भरकर रख लें। भोजन के बाद प्रति दिन इसे थोड़ा-थोड़ा पीने से अन्न शीघ्र हजम होता और शरीर में खून की वृद्धि होती है तथा इसके पीने वाला मस्ती में झूमने लगता है। बड़ी उत्तम चीज है।

तरबूज के भीतर से बीजों को निकाल, सिल पर पीस लें और घी में भूनकर शक्कर मिला, रोगी को खिलावें तो थूक के साथ खून आना और पित्तज कास आराम हो।

खरबूजा—खरबूजे का छिलका जलाकर राख बनालें

और उसकी आठ रत्ती की मात्रा मधु के साथ चटावें तो यकृत्, प्लीहा, उदर-शूल और अफारा मिटे।

ताजे खरबूजे के बीज बासी या शीतल जल के साथ पीसकर पेड़ू पर लेप करने से मूत्र शीघ्र उतर जाता है।

जिसके दिमाग में चक्कर आता हो उसे, इसके बीज पीस और घी में भूनकर शक्कर के साथ खाने के लिए देना चाहिए।

सुथनी—सुथनी सिल पर पीसकर, घी और खाँड़ डालकर हलुआ बनालें और स्त्री को खिलावें तथा ऊपर से दूध पीने को दें तो प्रदर-रोग आराम हो।

पालक—पालक-साग के पत्तों का ताजा रस पिलाने से पथरी की बीमारी मिटती है। इस रोग में इसका साग भी खाने को देना चाहिए।

सोया—सोया का साग खिलाने या सोया के बीज का क्वाथ पिलाने से सद्यः प्रसूता स्त्री के हृदय की दुर्बलता मिटती है। प्रसूता के उदर-शूल पर भी इसके क्वाथ का प्रयोग उत्तम है।

बथुआ—तिल्ली, अर्श और पित्तज व्याधि को दूर करने के लिए बथुए का साग खाना चाहिए।

इसकी ताजी पत्तियों के स्वरस में कालीमिर्च और सेंधा नमक का चूर्ण डालकर पीने से आन्त्र-शुद्धि होती है।

मूली—मूली के स्वरस में नमक मिलाकर पीने से पेट का भारीपन तथा पेशाब की रुकावट मिटती है और डकार खुलकर आती है।

मूली जलाकर, उसकी राख गरम जल के साथ खाने

से यकृत्, प्लीहा, उदर-शूल और पथरी की बीमारी दूर होती है।

मूली की राख कड़ुवे तेल में मिलाकर मालिश करने से शोथ मिट जाती है।

तोरई—तोरई के बीज पीस और गरम करके तिल्ली की सूजन पर लेप करने से सूजन कम हो जाती है।

इसके ताजे पत्तों का रस बच्चों की आँखों में छोड़ने से उनके अन्दर होने वाली पीली फुंसियाँ मिट जाती हैं।

चँदसुर (हालों)—इसके पत्तों का काढ़ा पीने से पेट का दर्द, अफारा और भारीपन मिटता है।

इसके बीज जल के साथ पीस और गरम करके दर्द वाले स्थान पर लेप करने से शीघ्र ही दर्द मिट जाता है।

आलू—तत्काल कले हुए स्थान पर आलू पीसकर लेप कर देने से फफोले नहीं पड़ने पाते और जलन मिट जाती है।

बैंगन—संखिया का विष दूर करने के लिए कच्चा बैंगन खिलाना चाहिए।

कच्चा बैंगन पीसकर योनि में पुल्टिस बाँधने से योनि तंग हो जाती है।

फूलगोभी—यदि लड़के आपस में लड़ते समय एक दूसरे को दाँत काट लें तो तीन-चार दिनों तक गोभी का कच्चा फूल खाने को देना चाहिए। इससे मनुष्य के दाँतों का विष दूर हो जाता है।

तपेदिक वाले को फूलगोभी उबालकर पिलाने से हृदय मजबूत होता है तथा खून की वृद्धि होती है।

भिंडी—कच्ची भिण्डी खाने से या उसकी जड़ का चूर्ण तीन माशे प्रातःकाल जल के साथ खाने से, पित्तज प्रमेह और प्रदर आराम होता है और उनके कारण होने वाली आँखों, हाथ-पैर की तलहथियों और सिर की जलन मिट जाती है।

करैला—करैले का रस पीने से गर्भ-स्थिति नहीं होने पाती।

करैले के रस में कालीमिर्च घिसकर आँखों में आँजने से उनका फूला और माड़ा मिटता है; लेकिन जलन बहुत होती है।

सेम—सेम के पत्तों का रस चेहरे पर मलने से उसकी झाँई मिट जाती है।

सेम की फली या पत्तों का रस लगाने से सेहुँआ आराम होता है और सेम की तरकारी खाने से शरीर के भीतर जीवनी-शक्ति बढ़ती है।

नागफनी—नित्य प्रातःकाल आठ आने भर नागफनी का गूदा आठ आने भर मिसरी के साथ खाने से कुछ दिनों में तिल्ली गल जाती है।

नागफनी के पके फलों के रस में मिसरी मिलाकर शरबत की विधि से पकाकर बोतल में रख लें। यह शरबत दस से तीस बूँद तक की मात्रा में छोटे बच्चों को चटाने से उनका बढ़ा हुआ पेट और यकृत् ठीक हो जाता है।

भाँगरा—भाँगरे की पत्तियों का गाढ़ा रस लेप करने से इन्द्रलुप्त, शिरः शूल तथा अर्द्धावभेदक आराम होता है।

यदि इसकी पत्तियों के रस की सिर में बराबर मालिश की जाय और उसकी नास भी ली जाय तो बाल काले, घुँघराले और मुलायम हो जाते हैं तथा नेत्र की ज्योति बढ़ती है।

मोथा—मोथे का काढ़ा पीने से उदर-कृमि, वमन, प्यास, मुख की दुर्गन्ध एवं विरसता मिटती है।

पुनर्नवा—पुनर्नवा का साग खाने और उसकी पत्तियों के रस की गरम-गरम मालिश करने से शोथ, जलन और खुजली मिटती है।

हुलहुल—हुलहुल का साग खाने से गिरह-गिरह का दर्द मिटता है।

इसकी पत्तियों का रस गरम करके बुखार आने से तीन घण्टे पहले, हाथ-पैरों के सभी नाखूनों में लगाने से पारी का शीतज्वर मिटता है।

धतूरा—दो आने भर धतूरे के सूखे पत्तों को चिलम में रखकर उसका धुआँ पीने से दमे का तेज दौरा रुक जाता है। दौरा शान्त होने पर धतूरे की गरमी मिटाने के लिए गाय का दूध पीना चाहिए।

शीत-ज्वर आने से पहले, हाथ-पैरों के नाखूनों में इसके पत्तों के गरम-गरम रस की मालिश करने से ज्वर आना रुक जाता है।

इसके पत्तों का रस गाय के घी में पकाकर लगाने से उकवत जड़ से आराम हो जाता है।

अपामार्ग—हाथ से उखाड़ी हुई चिड़चिड़े की जड़ से नित्य—नियमपूर्वक मुँह धोने से सहनशीलता बढ़ती है।

इसके एक छटाँक चावल की एक पाव गाय के दूध में खीर पकाकर खाने से कई दिनों तक भूख नहीं लगती और भस्मक—रोग मिटता है।

चिड़चिड़े का पौधा जलाकर राख करलें और वह राख कड़ुए तेल में मिलाकर कान में डालें तो कान बहना, भारीपन तथा उसमें तरह-तरह की आवाज होना दूर हो।

नोनी—सिल पर नानों पीस और गरम करके घावों पर लेप करने से वे जल्दी पक जाते हैं तथा उनकी जलन भी शान्त हो जाती है।

चकवड़—चकवड़ की मुलायम पत्तियों को घी में भूनकर खाने और इसकी पत्तियों के रस की मालिश करने से दाद मिट जाती है।

सत्यानाशी—फोड़े-फुन्सी, खुजली और कब्ज को दूर करने के लिए, आठ आने भर सत्यानाशी की जड़ और इक्कीस दाने कालीमिर्च जल के साथ पीसकर शरबत की तरह पीना चाहिए।

सहदेवी—सहदेवी के पंचांग का क्वाथ पीने से पेशाब की चिनग मिटती है और खुलकर पेशाब आता है।

इसके जड़ का काढ़ा पीने से गठिया—रोग मिटता है।

जिसे नींद नहीं आती हो, उसकी शिखा में रात्रि के समय सहदेवी की जड़ बाँध देने से खूब नींद आती है।

ककही—ककही की छाल के काढ़े से कुल्ले करने से दाँतों की पीड़ा और मसूड़ों के विकार मिटते हैं।

इसका क्वाथ प्रातःकाल पीने से अतिसार रोग मिट जाता है।

शरीर में बल की वृद्धि के लिए इसका काढ़ा, जितना काढ़ा रहे उतने ही दूध में पकाकर पीना चाहिए।

काकजंघा—काकजंघा के कंद का चूर्ण करके या बकरी के दूध में पीसकर, बकरी के दूध के साथ ही पीने से यक्ष्मा के कीटाणु मरते हैं। इसकी जड़ की मात्रा सवा से तीन माशे तक की है।

तिपतिया [चांगेरी] - धतूरे का विष दूर करने के लिए तिपतिया का रस पिलाना चाहिए।

इसकी पत्तियों के रस में काला या सेंधानमक मिला और गरम करके पिलाने से बच्चों का अतिसार मिटता है।

विशेष—बच्चों के लिए इसके रस की मात्रा चार से आठ आने भर की है। यदि बच्चा दो वर्ष से ऊपर का हो तो तोले—डेढ़ तोले तक भी एक वार में दिया जा सकता है।

इसको पत्तियों के रस का गण्डूष धारण करने से मसूड़ों का दर्द मिटता है।

तिपतिये का साग नियमित रूप से लगातार एक महीने तक खाने से गई हुई दृष्टि फिर लौट आती है।

यदि तलहथियों में अपरस की बीमारी हो जाय तो इसकी पत्तियाँ पीसकर लेप करने से अपरस दूर हो जाता है।

वनचौलाई—जड़-सहित वनचौलाई पीस और गरम करके पुल्टिस बाँधने से जहरीले फोड़े शीघ्र फूटकर वह जाते हैं।

इसका साग खाने और इसके पंचांग का रस समूचे शरीर पर मलिश करते रहने से अशुद्ध पारद, अशुद्ध संखिया और कई तरह के शरीर के भीतर व्याप्त जहरीले असर दूर हो जाते हैं। यह एक चामत्कारिक बूटी है।

कुकरौंधा—जड़-सहित कुकरौंधे के पौधे को मसल कर बवासीर के मस्से पर पट्टी बाँधने से उसका दर्द मिटता है।.

यदि शरीर का कोई हिस्सा कट जाय तो तुरत कुकरौंधे के पत्तों का रस चुपड़ देने से खून बहना बंद हो जाता है और घाव सूख जाता है।

दूब—दूब के रस में मोटा कपड़ा रँगकर पहनने से गरमी के दिनों में लू नहीं लगती और शरीर की जलन मिटती है। यह अनुभव-सिद्ध है।

दूब के दो तोले रस में आठ आने भर मधु मिलाकर पीने से नाक से खून गिरना बंद होता है।

तितलौकी—तितलौकी के बीज पीसकर लेप करने से पक्षाघात आराम होता है।

इसके बीज जल के साथ पीसकर पानी में घोल लें और लोहे की कड़ाही में इसे आग पर पकावें। जब पानी के ऊपर तेल तैरने लगे, नीचे उतार लें और उस तेल की कामला रोग के रोगी को नास दें तो रोग से छुटकारा मिलेगा।

नीम—अहले सुबह, नीम के पेड़ के भीतर की छाल का काढ़ा पीने से शीतपूर्वक आने वाले ज्वर की रुकावट होती है।

पाँच से दस बूँद तक, नीम का शुद्ध तेल पान में डालकर खाने से श्वास की बीमारी अच्छी होती है।

पीपल—पीपल-वृक्ष के ऊपर की सूखी छाल कूट और कपड़छन करके बिगड़े हुए घाव में भर देने से वह शीघ्र ही सूख कर अच्छा हो जाता है।

पीपल के मुलायम कोंपल खाँड़ की चाशनी में पकाकर प्रतिदिन खाने से प्रमेह की बीमारी दूर होती है तथा शरीर में शक्ति उत्पन्न होती है।

बड़–नित्य प्रातःकाल एक बताशे के अन्दर पाँच से पंद्रह बूँद तक की मात्रा में बड़ का दूध खाने से, कुछ दिनों में शुक्रमेह और प्रदर जड़ से आराम हो जाता है

बड़ की जटा से, नियमपूर्वक दतुअन करने से आयु, बुद्धि और तेज की वृद्धि होती है।

सहतूत—सहतूत के पत्तों के काढ़े से कुल्ले करने या उसके गण्डूष धारण करने से मुख के छाले मिटते हैं।

पके सहतूत के रस में खाँड़ डालकर बनाये हुए पानक के व्यवहार से कफ का रोग मिटता एवं हृदय मजबूत होता है।

महुआ—महुए की छाल पीस और गरम कर लेप करने से गठिया की बीमारी मिटती है।

इसके फूल के काढ़े से वफारा देने से बढ़ा हुआ अंडकोष छोटा होता है और उसका दर्द भी मिटता है।

आम—देशी आम के पेड़ की जड़ के निकट की छाल का क्वाथ बनाकर पिलाने से प्रसव के बाद का या माहवारी बिगड़ने के कारण रुका हुआ खून जारी हो जाता है।

कटहल—कटहल के पत्तों को पीसकर लेप करने से गाँठ जल्दी पक जाती है।

इसकी जड़ की छाल का क्वाथ बनाकर नास लेने से सिर की भयंकर पीड़ा शान्त होती है।

जामुन—जामुन की छाल का कपड़छन चूर्ण तीन माशे खाकर ऊपर से चावल का धोवन पीने से आमातिसार मिटता है।

जामुन की दतुअन से मुँह धोने से हिलते हुए दाँतों में कसावट आती है।

सहिजन—सहिजन की जड़ की छाल के रस की नास देने से मूर्च्छा मिटती है।

इसकी जड़ की छाल अढ़ाई तोले की मात्रा में गरम करके पिलाने से उदर-शूल शीघ्र मिटता है।

इसकी मुलायम पत्तियाँ घी में भूनकर खाने से गिरह-गिरह का दर्द मिटता है।

इसकी जड़ खूब महीन पीसकर वातज विद्रधि पर लेप करके ऊपर से कंडे की आग की सेंक करें तो वातज विद्रधि बैठ जाती है।

अग्निमान्द्य मिटाने के लिए इसकी फली की तरकारी खानी चाहिये।

इसकी छाल पीस और गरम करके लेप करने से आमवात की शोथ दूर होती है।

बेल—यदि किसी औषधि से घाव न आराम हो तो रोगी को बेलपत्र के काढ़े में मधु मिलाकर पिलाना चाहिए और घाव पर मुलायम बेलपत्र पीसकर पुल्टिस बाँधनी चाहिए।

कच्चा बेल छीलें और टुकड़े-टुकड़े करके धूप में सूखने दें। जब वे सूख जायँ, कूट और कपड़छन करके बोतल में रख लें।

इस चूर्ण की दो आने भर की मात्रा लेकर शरबत अनार, बकरी के दूध या गरम जल के साथ रोज दिन में तीन बार खिलाने से बच्चों के आमातिसार, रक्तातिसार, अतिसार, पेशाब में चूना आना, अरुचि और मुख की विरसता दूर होती है।

कदम्ब—यदि अंडकोष फूल आवें और उसमें दर्द हो तो उस पर गाय के पुराने घी से चुपड़े हुए कदम्ब के पत्ते बाँधें और ऊपर से पुरानी रूई से सेंक करें। शीघ्र ही लाभ होगा।

फालसा—फालसे के पत्तों की पुल्टिस बाँधने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं।

इसकी जड़ की छाल का क्वाथ बनाकर पीने से गिरह का दर्द आराम होता है।

पके हुए फालसे के रस में खाँड़ डालकर बनाये हुए शरबत पीने से दाह, कफ, प्रमेह, प्यास, कण्ठ सूखना और प्रदर आराम होता है।

अनार—अनार के पेड़ की छाल या अनार के फल के ऊपर का छिलका कूट और कपड़छन करके रख लें और उसकी तीन माशे की खूराक लेकर उसमें जरा सेंधानमक मिलाकर गरम जल से खायें तो खाँसी और अतिसार दूर हो।

योनि में अनार की छाल की धूनी देने से गर्भ गिर जाता है।

जम्बीरी नीबू—जम्बीरी नीबू के पेड़ की धूनी देने से घर में हैजा होने का डर नहीं रहता।

खाँड़ के साथ बनाये हुए जम्बीरी नीबू के रस का शरबत पीने से पित्तज दाह, प्यास, चक्कर आना, पुफ्फुस, आन्त्र,

आमाशय तथा मल-मार्ग से होने वाला रक्त स्राव बन्द होता है तथा रोगी को शान्ति मिलती है।

शरीफा—शरीफे का बीज जल में पीसकर सिर में मलने से जूएँ मर जाती हैं।

इसका बीज बकरी के दूध के साथ पीसकर लेप करने से सिर के उड़े हुए बाल शीघ्र उग आते हैं और मस्तिष्क में तरावट पहुँचती है।

अमरूद—अमरूद के घन क्वाथ की पुल्टिस बाँधने से गुदभ्रंश रोग (काँच निकलना) मिटता है।

मसूड़ों की शोथ दूर करने के लिए अमरूद के पत्तों का काढ़ा बनाकर उसका गण्डूष (कुल्ला) धारण करना चाहिए।

आँवला—आँवले के फल के अढ़ाई तोले रस में मधु मिलाकर पीने से वातगुल्म, बेहोशी, दाह तथा नाक-मुँह से खून गिरना बन्द होता है।

दो छटाँक आँवले की पत्तियाँ आधा सेर जल में उबाल और छानकर पिलाने से, अधिक काल का शरीर में भींगा हुआ अफीम का विष शान्त हो जाता है।

पोदीना—पोदीने का क्वाथ बनाकर पीने से प्यास, कंठ सूखना, वमन, पित्तज अतिसार और अरुचि का नाश होता है।

आमातिसार में पोदीने और मिसरी का शरबत पिलाना चाहिए।

सूरण—उबाले हुए सूरण की रोटी बनाकर घी के साथ खाने से बवासीर मिटता है।

पेट की अग्नि तेज करने के लिए भोजन के साथ सूरण की तरकारी का व्यवहार करना चाहिए।

केला—दूखती हुई आँखों को उजेले और चमक से बचाने के लिए उस पर केले के ताजे हरे पत्ते की छाया करनी चाहिए।

इसकी जड़ का काढ़ा पिलाने से आँतों के कीड़े मरते हैं।

अतिसार वाले रोगी को उबाले हुए कच्चे केले की रोटी खिलाने से दस्त बँधकर आने लगता है।

केले के खम्भे का रस पीने से रुका हुआ मासिक धर्म खुलकर होने लगता है।

कनेर—कनेर के पत्तों के रस में कड़ुआ तेल डालकर आग पर पकावें। जब केवल तेल मात्र शेष रहे, उतार लें और उसकी खुजली पर मालिश करें तो खुजली तीन दिनों के अंदर ही सूख जाय।

मौलसिरी—मौलसिरी की छाल के चूर्ण या इसकी लकड़ी के कोयले के चूर्ण से दाँत साफ करने से वे मजबूत, चमकीले और राग-रहित हो जाते हैं।

कचनार—गण्डमाला-रोग के रोगी को कचनार की छाल के काढ़े में कुछ देर नित्य बैठना चाहिए और उसे फूलों की या मुलायम पत्तियों की तरकारी बनाकर खिलानी चाहिए। यदि गण्डमाला फूटकर बहती हो तो उसके ऊपर कचनार के घन क्वाथ या पत्तियों का गाढ़ा-गाढ़ा रस चढ़ाना चाहिए।

चम्पा—चम्पे की छाल का काढ़ा पीने से शय्या-मूत्र (स्वप्न में मूत्र निकल जाना) की बीमारी मिटती है।

इसकी छाल को कालीमिर्च के साथ पीसकर बनाई हुई गोली शीतज्वर को रोकती है।

अगस्त—अगस्त के पुष्पों या पत्तियों के रस की नास लेने से चौथैया बुखार आना रुक जाता है।

यदि किसी को रतौंधी हो गयी हो तो उसे इक्कीस दिनों तक अगस्त के फूल या उसकी कली की तरकारी बनाकर खाने को दें।

मोतिया बेला—यदि दृष्टि मन्द हो गयी हो तो बेला के पत्तों के काढ़े से आखें धोनी चाहिए।

इसके पत्तों के काढ़े से कुल्ला करने से मुँह का आना आराम होता है।

ओड़हुल—प्रदर रोग से पीड़ित स्त्रियों को नित्य प्रातः-काल पाँच ताजे ओड़हुल के पुष्प सिल पर पीसकर गाय के ताजे दूध और मिसरी के साथ सेवन करना चाहिए। प्रदर के अतिरिक्त इसके प्रयोग से योनि या मल-मार्ग से गिरने वाला खून भी रुक जाता है।

गेंदा—गेंदे की ताजी पत्तियों का रस गरम करके कान में डालने से कान की पीड़ा, कर्ण-स्राव और उसके भीतर होने वाला फुन्सियाँ मिटती हैं।

यदि कटकर शरीर से खून निकल रहा हो तो उस पर गेंदे की पत्तियों का रस डालें, तो शीघ्र ही खून बन्द होगा।

चमेली—चमेली की पत्तियाँ तिल के तेल में पकाकर लग पर लेप करने से ध्वज-भंग नष्ट होता है।

चमेली की पत्तियाँ पीस और शहद मिलाकर जिह्वा पर लेप करने से बच्चों का मुख-पाक मिटाता है। यदि जवान आदमी का मुँह आया हो तो इसकी पत्तियों के क्वाथ में शहद मिलाकर कुल्ले करने से या काढ़े का गण्डूष धारण करने से मुँह का आना मिटता है।

जूही—जूही की पत्तियों के काढ़े से धोने से खुजली मिटती है। शरीर में उठने वाली छोटी-छोटी फुन्सियाँ, इसके तीन-चार दिनों के व्यवहार से ही सूख जाती है।

स्वर्ण-जूही की जड़ पीसकर योनि पर पुल्टिस बाँधने से वह संकुचित हो जाती है।

गुलाब—गुलाब के फूलों का काढ़ा, शहद मिलाकर पीने से दस्त साफ होता है, आँखों की जलन, कंठ और नाक का सूखना एवं दिमाग की गरमी मिटती है।

खाँड़ की चाशनी में पकाये हुए गुलाब के फूल के सेवन से कब्ज, नाक—मुँह से खून गिरना, आँखों के सामने अंधेरा छा जाना, दिमाग में चक्कर आना तथा हृदय की कमजोरी दूर होती है। गरमी और बरसात के मौसम में इसे रोज खाने के काम में लाना चाहिए। बहुत अच्छी चीज है।

बड़ा करंज—बड़े करंज की फली काले डोरे में गूँथकर बच्चों के गले में पहनाने से उनकी आँखों के रोग मिटते हैं।

इसकी फली के भीतर की गिरी का चूर्ण चार रत्ती की मात्रा में शहद के साथ चटाने से बच्चों के पेट के कीड़े मरते हैं।

इसके बीजों के तेल की मालिश करने से खुजली जल्दी आराम हो जाती है। खुजली दूर करने में यह बहुत ही उपयोगी है।

इसकी दतुअन से मुँह धोने से मुँह की बदबू, मसूड़ों के रोग तथा मुँह की विरसता दूर होती है।

छोटा करंज [करंजुआ]—करंजुए की मींगी और कालीमिर्च. दोनों को सम भाग लेकर खरल कर डालें और डेढ़ माशे की मात्रा से दो-दो घण्टे पर गरम जल से खिलावें तो शीतज्वर की रुकावट हो।

करंजुए की मीगियाँ जल में पीसकर सिर धोने से सिर की जूँ, फुन्सियाँ, खाज और मैल दूर होता है।

छोटी कटेरी—छोटी कटेरी की जड़ का काढ़ा पीने से श्वास का दौरा, प्रतिश्याय (जुकाम) और मूत्रकृच्छ्र रोग मिटता है।

इसका फल पीसकर गाँठ पर लेप करने से वह बैठ जाती है।

बड़ी कटेरी-बड़ी कटेरी की जड़ पीसकर जल में मिलाकर छोटे बच्चे को पिलाने से कब्ज दूर होता है।

विशेष—इसकी जड़ की पूर्ण मात्रा चार आने भर से दो तोले तक की है।

यदि बकरी पागुर (चर्वित-चर्वण) न करे तो उसे बड़ी कटेरी का फल जल के साथ पीसकर पिलाना चाहिए।

विशेष—बकरी के लिए चार तोले फल की एक मात्रा करनी चाहिए।

झाऊ—झाऊ की जड़ का क्वाथ सेवन करने से उपदंश, प्रतिश्याय, कंठ सूखना और प्यास मिटती है।

इसकी दतुअन करने से दाँतों के विकार और मुँह की विरसता मिटती है।

कास—कास की जड़ का क्वाथ पीने से प्रसव के बाद का रुका हुआ खून निकल जाता है। इसके अतिरिक्त दाह, मूत्रकृच्छ्र और पित्त-विकार के लिए भी हितकर है।

अमरबेल—अमरबेल पीसकर पेट पर लेप करने से जलोदर, यकृत् की कठोरता और आहमान मिटता है।

इसके क्वाथ या हिम के व्यवहार से कोष्ठ की शुद्धि होती है

बरियारा—बरियारा की जड़ की छाल का क्वाथ पीने से गठिया मिटती है और मूत्र खुलकर आता है। यदि इसकी जड़ की छाल का हिम बनाकर पिलाया जाय तो शरीर के भीतर की दाह मिटती है।

इमली—इमली की पत्तियाँ उबालकर मोच या टूटे हुए अंग को उसी जल से सेंक करनी चाहिये और धीरे-धीरे शोथ की जगह को उँगलियों से पिघलाना भी चाहिए कि जिससे जमा हुआ खून इधर-उधर हो जाय।

कैथ—कैथ की छाल का क्वाथ बनाकर पिलाने से बच्चों का अजीर्ण और अतिसार मिटता है तथा पित्त का प्रकोप शमन होता है।

पाँकर—पाँकर की छाल के क्वाथ का गण्डूष धारण करने से मुँह से पानी गिरना बन्द होता है।

इसके क्वाथ से घाव थने से उसकी शुद्धि हो जाती है।

इसकी कोंपल की तरकारी या अचार चैत्र के महीने में खाने दस्त खुलासा होता है तथा कीड़े फुन्सियाँ होने का डर नहीं रहता।

खजूर—खजूर की मुलायम दतुअन से मुँह धोने से दाँत का दर्द मिटता है।

जिसके पेट की वायु बिगड़ी रहती हो, हर समय पेट में तनाव बना रहता हो उसे, सोपारी की तरह खजूर के बीजों को चूसते रहना चाहिए।

शीशम—शीश की लकड़ी जलाते समय जो तेल टपके उसे रख लें और खुजली पर उसी की मालिश करें। यदि गीली खुजली हो तो कौए के पंख से उसके ऊपर वह तेल लगावें, बहुत जल्दी लाभ होगा।

पेशाब की रुकावट पर शीशम की पत्तियाँ पीसकर पेड़ू पर चढ़ाने से पेशाब उतर आता है।

अधिक गरमी या लू के कारण यदि बैल तरस जाय तो उसे शीशम की हरी पत्तियाँ खिलानी चाहिए। इससे उसके शरीर में व्याप्त गरमी शान्त हो जाती है और जीभ निकालना बंद कर देता है।

गूलर—गूलर का दूध घाव पर रखने से घाव फूट जाता है। इसका पका फल सुखा, कूट और कपड़छन करके आठ आने भर

की मात्रा में शीतल जल के साथ नित्य प्रातःकाल खाने से, प्रदर, रक्तप्रदर और योनि-दोष मिटता है।

बाँस—बाँस की मुलायम डंठल गरम राख में दबादें। जब वह सिक जाय, उसका रस निचोड़कर कान में डालें तो कान का दर्द तुरत आराम हो।

ताड़—ताड़ का पका फल छीलकर उसके गूदे के भीतर एक पतली सींक उलझा दें और उसे घुमावें। इस प्रकार उसके अंदर से जो पीला और गाढ़ा रस निकाले, उसे कंडे से खुजलाये हुए दाद पर लेप कर दें और ऊपर से थोड़ी चीनी बुरक दें। थोड़ी देर बाद दाद के ऊपर महीन-महीन दाद के कीड़े दृष्टिगोचर होने लगेंगे, उन्हें जल से धोकर कपड़े से पोंछ डालें। इस प्रयोग को चार-पाँच दिनों तक लगातार करते रहने से भयंकर दाद मिट जाती है।

फरहद—उपदंश-सम्बन्धी गाँठ बैठाने के लिये फरहद के पत्ते की पुल्टिस बाँधनी चाहिए।

इसकी छाल का काथ पीने से ज्वर तथा उदर-कृमि का नाश होता है।

ढाक—अतिसार और ज्वरातिसार को दूर करने के लिए ढाक के पत्तों का रस पिलाना चाहिए।

इसके पत्ते सेंक कर फोड़ों पर बाँधने से, वे बैठ जाते हैं।

इसके बीजों का चूर्ण दो से तीन माशे की मात्रा में जल के साथ देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

नरसल—नरसल की जड़ पीस और कहुए तेल में मिलाकर कुछ गरम-गरम लेप करने से जोड़ों का दर्द मिटता है।

वकायन—स्नायु-सम्बन्धी मस्तक-पीड़ा दूर करने के लिये वकायन के पत्तों और पुष्पों की, पीड़ा वाले स्थान पर, पुल्टिस बाँधनी चाहिए।

इसके पत्तों का रस गरम करके लेप करने से सर्दी की शोथ मिटती है।

सिरस—सिरस की जड़ की छाल के चूर्ण के मंजन करने से पके हुए मसूड़े ठीक हो जाते हैं।

नेत्र की पीड़ा दूर करने के लिए इसकी छाल महीन पीसकर नेत्र के चारों ओर लेप करना चाहिए।

इसके बीज जल के साथ पीसकर लेप करने से गण्डमाला की बीमारी दूर होती है।

थूहर—हाथ-पैरों के सभी नाखूनों और नाभी के ऊपर थूहर के दूध का लेप करने से स्त्री शीघ्र ही प्रसव कर देती है। प्रसव के बाद तुरत नाखूनों और नाभी पर से दूध, कपड़ा भिंगोकर पोछ डालना चाहिए।

इसका एक पत्ता गरम राख में दबाकर पका लें और फिर उसे निचोड़कर पाँच से दस बूँद तक रस छोटे बच्चे को पिलावें तो उसके पेट का दर्द, कब्ज और पेट का तनना मिट जाय।

आक—आक के पीले पत्ते और उतना ही तौल में नमक लेकर दोनों चीज एक मिट्टी के बरतन में बंद कर कण्डे की आग में पका लें और शीतल होने पर औषधि कूट और कपड़छन

कर रख लें। नित्य प्रातः और सायंकाल एक से तीन माशे की मात्रा में यह चूर्ण खाकर ऊपर से दही का पानी या मट्ठा पीने से यकृत्, प्लीहा, उदर-शूल तथा वायुगोला नष्ट होता है। इसके दूध की पट्टी बाँधने से संधिशूल नष्ट होता है।

सेमल—एक वर्ष के उगे हुए सेमल के लघु वृक्ष की जड़ (कन्द) का रस चार तोले और उतना ही गाय का कच्चा दूध मिलाकर चालीस दिनों तक नित्य प्रातःकाल पीने से शुक्रमेह, शीघ्रपतन, शिश्न शैथिल्य आदि विकार नष्ट होते हैं और वह मनुष्य-कामिनी स्त्रियों का प्रियपात्र बन जाता है।

सेमल के फूलों का रस चार तोले और मिसरी मिला हुआ बकरी या गाय का दूध चार तोले—दोनों को मिलाकर नित्य प्रातःकाल पीने से स्त्रियों का श्वेत और रक्त-प्रदर तथा दिमाग का चक्कर आना मिटता है।

इसकी रूई से रेंड़ी के तेल में, काँसे की थाली पर घिसकर बनाया हुआ मरहम पित्तज व्रण को मिटाता है।

अडूसा—दो तोले अडूसे के पत्ते के रस में आठ आने भर मधु मिलाकर पिलाने से, रक्त-पित्त, क्षय, कास और श्वास मिटता है।

इसके फूलों का मिसरी के साथ धूप में पकाकर बनाया हुआ गुलकन्द मुलायम-से-मुलायम औषधों में सुमार कीया जाता है। इसे बालक-वृद्ध या कोमल स्त्रियाँ भी व्यवहार कर सकती हैं। इसके सेवन से भी ऊपर कहे हुए रोग मिटते हैं। इसकी प्रकृति अत्यन्त मातदिल है। इसकी खूराक तीन माशे से दो तोले तक की है।

विशेष—अडूसे का फूल और उतनी ही तौल में मिसरी का चूर्ण लेकर दोनों को तलहथियों से कुछ देर मसलें और फिर एक चौड़े मुँह के शीशे के बरतन में रखकर धूप लगने को छोड़ दें। महीने-डेढ़ महीने में व्यवहार के योग्य गुलकन्द हो जायगा।

अशोक—अशोक की छाल दो तोले लेकर आधा सेर जल में उबालें, जब आधा पाव जल शेष रहे, उतार लें और कपड़े से छानकर छाल फेंक दें, केवल जल-ग्रहण करें। फिर उतने ही गाय के दूध में उसे पकावें। जब केवल दूध ही रह जाय, उतार लें और मिसरी मिलाकर स्त्री को पिलावें तो लाल, सफेद सभी तरह के प्रदर का रोग आराम हो। साथ ही प्रदर के कारण होने वाले उपसर्ग,—जैसे हाथ-पैरों का जलना, कमर और सिर में दर्द, आँखों में गरमी का अनुभव होना तथा चक्कर आना आदि मिट जाते हैं।

गुडूची—गुडूची के क्वाथ का सेवन करने से पुराना गठिया, प्रमेह, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, वातरक्त तथा हाथ-पैरों की जलन मिटती है।

इसके काढ़े में तिल का तेल पकाकर सिर और समूचे शरीर में मालिश करने से खुजली मिटती है, शरीर कान्तिवान् होता और बाल काले एवं चमकीले दीख पड़ते हैं।

लिसोड़ा—लिसोड़े के कोमल पत्ते गरम करके दस दिनों तक गण्डमाला पर बाँधने से, वह आराम हो जाता है।

इसके एक तोले पत्ते पन्द्रह-बीस कालीमिर्च के साथ जल में पीस और छानकर पीने से उन्मत्त कुत्ते का विष शान्त होता है।

खाँड़ के साथ बनाये हुए लिसोड़े के पके फलों का शरबत पीने से खाँसी और धातु की बीमारी मिट जाती है।

सिवार—जिसे सूज़ाक की बीमारी हो गयी हो उसे, अपने लिंग के छेद में सिवार के काढ़े की पिचकारी लगानी चाहिए या इसका रस निचोड़कर उसकी बूँदें छोड़नी चाहिए। इससे लिंग के भीतर का घाव अच्छा हो जाता है।

सिवार की राख में बराबर हिस्से में लाल खाँड़ मिलाकर शीतल जल के साथ सेवन करने से शुक्र-तारल्य और प्रमेह नष्ट होता है।

गधे की लीद—योनि में गधे की लीद की धूनी देने से गर्भ गिर जाता है।

वसन्त ऋतु में इसका दूध बच्चों को पिलाने से शीतला-रोग होने का डर नहीं रहता।

अरहर की पत्तियाँ—एक मुट्ठी अरहर की मुलायम पत्तियाँ प्रातःकाल चबाने से मुँह का आना मिटता है।

धान—धान की फलियों के ऊपर के फूलों को जल के साथ पीसकर लेप करने से हृदय की धड़कन और हौलदिल मिटता है।

कपास—कपास के पत्ते और कालीमिर्च पीसकर बाघी पर लगाने से, वह बैठ जाती है।

कुसुम—कुसुम के सूखे पुष्पों का चूर्ण तीन माशे की मात्रा में ठण्ढे पानी के साथ सेवन करने से कामला-रोग नष्ट होता है।

——

रसायनशास्त्री-
पं० श्यामसुन्दराचार्यवैश्य

विरचित

रसायनसार

रस-शास्त्र का क्रियात्मक सच्चा ज्ञान
कराने वाला अनुपम ग्रन्थ

संशोधित और परिवर्द्धित

चतुर्थ संस्करण

मू० ६)